9th hindi notes chapter 6 आ रही रवि की सवारी

आ रही रवि की सवारी

हरिवंश राय बच्चन

कवि – परिचय

हरिवंश राय बच्चन का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में 27 नवंबर 1907 ई . को हुआ था । ' बच्चन ' माता – पिता द्वारा प्यार से लिया जानेवाला नाम था जिसे इन्होंने अपना उपनाम बना लिया । बच्चन कुछ समय तक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहने के बाद भारतीय विदेश सेवा में चले गए थे । इस दौरान उन्होंने कई देशों का प्रमण किया और मंच पर ओजस्वी वाणी में काव्यपाठ के लिए विख्यात हुए । बच्चन की कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं । इनकी रचनाओं में व्यक्ति – वेदना , राष्ट्र – चेतना और जीवन – दर्शन के स्वर मिलते हैं । **बच्चन की प्रमुख कृतियाँ हैं** – मधुशाला , निशा – निमंत्रण , एकांत संगीत , मिलन – यामिनी , आरती और अंगारे , टूटती चट्टानें एवं तरंगिनी और आत्मकथा के खंड – क्या भूलूँ क्या करूँ , नीड़ का निर्माण फिर , बसेरे से दूर , दशद्वार से सोपान तक ।

बच्चन साहित्य अकादमी पुरस्कार , सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और सरस्वती सम्मान से सम्मानित हुए । प्रस्तुत कविता ' आ रही रवि की सवारी ' बच्चन के कविता संकलन निशा – निमंत्रण से ली गई है । बच्चन ने यह कविता अपनी प्रथम पत्नी श्यामा की मृत्यु के बाद लिखी थी । युग – जीवन की निराशा को मस्ती में रूपांतरित कर लेनेवाले बच्चन के व्यक्तिगत जीवन में जब यह घटना घटी तो फिर वह मधु के गीत नहीं गा सके । धीरे – धीरे वच्चन निष्क्रियता की परिधि से बाहर निकले तो एक दिन अनायास कविता की पंक्ति उनके अंतस् से फूट निकली । यह दिशा – निमंत्रण की पहली पंक्ति थी और साथ ही कवि का अपनी काव्य – यात्रा के दूसरे चरण में प्रवेश । यह घोर विषाद और उन्माद का चरण था । निशा – निमंत्रण में बच्चन की काव्य – प्रतिभा का सहजतम और तीव्रतम विस्फोट हुआ है । ' दिन जल्दी – जल्दी ढलता है ' से निशा के आगमन की व्यथा – कथा शुरू होती है और जैसे – जैसे निशा गहराती है , अवसाद बढ़ता जाता है । फिर भोर में आया कि पहली किरण फूटती है और कुछ देर बाद क्षितिज पर संभावनाओं का सूरज झाँकता दिखाई देता है । ' निशा – निमंत्रण ' के गीतों में एक ऐसी उदासी समाई है , जो धीरे – धीरे पाठक अथवा श्रोता के मन की उदासी को सोखती रहती है और अंत तक पहुँचते – पहुँचते वह एकदम हल्का हो जाता है । इन्हें सुनते हुए लगता है जैसे कोई झरना बह रहा है और हम किनारे खड़े उसकी कल – कल ध्वनि सुन रहे हैं । यहाँ कवि का एकाकीपन – जनित विषाद बहुत तीखे ढंग से अभिव्यक्त हुआ है । लेकिन यह विषाद हताश नहीं करता , निराशा के तिमिर को विच्छिन्न करके आशा की किरण उगाने को प्रेरित करता है ।

आत्मकथा के चार खंड : क्या भूलूं क्या याद करूं (1969) , नीड़ का निर्माण फिर (1970) , बसेरे से दूर (1977) , दशद्वार से सोपान तक ।

कविता का भावार्थ

जिस प्रकार राजा के निकलने के पहले रथ को सजाया – संवारा जाता है , पथ को सजाया जाता है , अनुचर आगे – पीछे लगे रहते हैं । उसी प्रकार सूर्य रूपी राजा के लिए नये किरणों से रथ सजा है , सुबह होते ही कलियाँ खिल जाती हैं मानो वैसा लग रहा हो जैसे रास्ते में चिढ़ाया गया हो । बादल अनुचर के रूप में पीछे – पीछे चल रहे हैं ।

https://www.evidyarthi.in/

स्वर्ण – वर्णी प्रकाश के कारण स्वर्ण वर्ण की पोशाक धारण किये हुए प्रतीत होते हैं । पक्षियों का कलरव गान मानो बंदी और चारण राजा का पश गाते मालूम पड़ रहे हैं । सूर्य के प्रकाश के कारण तारे वैसे लग रहे हैं , जैसे युद्ध करने आये ये लेकिन राजा के आते ही मैदान छोड़कर भाग गए । यह विजय देखकर कवि ठिठक जाता है और सोचने पर विवश हो जाता है कि रात का राजा चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश में भिखारी – सा प्रतीत होता है ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/